आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-09-14

पतित आत्माओं को योग सिखलाकर, पतित से पावन बनने का रास्ता बतलाने वाले, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - योगबल से बुरे संस्कारों को परिवर्तन कर स्वयं में अच्छे संस्कार डालो. ज्ञान और पवित्रता के संस्कार अच्छे संस्कार है.

यह तो हम जानते हैं की हमारी आत्मा में सात ओरिजिनल संस्कार हैं - ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, आनंद, प्रेम और शक्ति. इसमें से बाकी ६ संस्कार तो हम समझ सकते है लेकिन ज्ञान का संस्कार क्या है? आत्मा को स्वयं का संपूर्ण ज्ञान होना - यह है ज्ञान के संस्कार. जब हमारी आत्मा सबसे पहले सतयुग के आदि में देवी-देवता के रूप में जन्म लेती हैं यानी आत्मा जब पहले-पहले परमधाम से इस धरती पर आती हैं तो उसमें ज्ञान का संस्कार आपे ही होता हैं. जिसके कारण ही देवी-देवताये सतयुग में नेचरल रुप से आत्मा-अभिमानी रहते हैं. उन्हें यह भी ज्ञान रहता है की हम सब आत्माये हैं और एक शरीर छोड़, दूसरा लेते है. उसके आधार से ही वह लम्बा (१५० वर्स का) जीवन जीते है और जब उन्हें अपना शरीर छोड़ना होता है तो भी पहले से साक्षात्कार होता है की अब में आत्मा यह पुराना शरीर छोड़कर नया लुंगी और खुशी से शरीर छोड़ देती है. देवी-देवताओं में दूसरा मुख्य संस्कार होता है - संपूर्ण पवित्रता, जिसके आधार से ही वह सतयुग में संपूर्ण सुख-शांति-आनंद-प्रेम से रहते है. बाबा हमें योगबल से आत्मा के बुरे संस्कारों को खत्म कर, ज्ञान और पवित्रता के संस्कार को भरने के लिए कहते हैं, जिसे की हमारी आत्मा सतयुग के देवी-देवता बनने के लायक बन जायें.

हमारी आत्मा जब कल्प के आदि में, यॉ कहे परमधाम से सतयुग आदि में इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तब हमारी आत्मा में सातों ओरिजिनल गुणों से भरपूर रहती हैं. फिर आत्मा जैसे-जैसे और जन्म लेती जाती है तो हमारी आत्मा में धीरे-धीरे विकार बढ़ते जाते है. सतयुग से त्रेता के अन्त तक आत्मा, देही-अभिमानी रहकर पार्ट बजाती है तो ज्यादा फर्क नहीं पड़ता हैं. फिर द्वापर से आत्मा, देह-अभिमानी होकर पार्ट बजाती है तो आत्मा में विकारों की कट चढ़ती जाती हैं. फिर कलियुग में और भी तीव्र गति से विकारों की कट चढ़ती जाती है.

कलियुग के अन्त में आत्मा संपूर्ण विकारी बन जाती हैं तो उसके सातों ओरिजिनल गुण ओझल हो जाते हैं. मतलब की आत्मा में सातों गुण तो हैं लेकिन विकारों के संस्कार के नीचे दब जाते हैं. अब बाबा के साथ योगबल से विकारों को जैसे-जैसे निकालते जाते हैं वैसे-वैसे आत्मा के ओरिजिनल गुण वापस इमर्ज होते जाते हैं.

ज्ञान और पवित्रता के संस्कार स्वयं में भरने के लिए, नीचे दी गई कोमेंट्रि को युज कर बाबा से योग करें.

मैं आत्मा हूँ, ज्ञान-सागर बाप से ज्ञान के संस्कार भर रही हूँ. अब मुझे अपने सत्य स्वरूप आत्मा का पूरा ज्ञान हैं. मैं आत्मा, ज्योति स्टार स्वरूप हूँ. मैं आत्मा, असूल में परमधाम में रहती हूँ. मैं आत्मा, सतयुग के आदि में इस घूरा पर पार्ट बजाने आती हूँ. मैं आत्मा, पांच तत्वों का शरीर लेकर पार्ट बजाती हूँ. मैं आत्मा, शरीर में भृकुटी के मध्य में रहकर, आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियॉ - मन, बुद्धि और संस्कार के द्वारा इस शरीर की स्थूल कर्मेन्द्रियॉ को चलाती हूँ. मुझ आत्मा को ज्ञान-सागर बाप से दिव्य-बुद्धि का वरदान प्राप्त हुआ हैं. अब मैं आत्मा, मेरी दिव्य-बुद्धि को युज कर स्वराज्य अधिकारी बनती हूँ.

मैं आत्मा हूँ, पवित्रता के सागर से पवित्रता की शक्ति मुझ आत्मा में भर रही हूँ. यह पवित्रता की शक्ति, मेरे में रहे विकारों को नष्ट करती जा रही हैं. अब मुझ आत्मा में संपूर्ण पवित्रता के संस्कार इमर्ज हो रहे हैं. यह पवित्रता के संस्कार मेरे चित को शांत कर, मेरी वृति को पावन बना रहे हैं. पावन वृति ही मेरी दृष्टि को स्वच्छ बना रही हैं. अब मेरी कृति भी परिवर्तन हो रही हैं.

ॐ शांति.